माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में निर्देशन सेवाओं की स्थिति एवं आवश्यकता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

मानसी शुक्ला*

*पी-एच. डी. शोधार्थी ,शिक्षाशास्त्र विभाग ,लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उत्तर प्रदेश), भारत
ईमेल: manshishukla19@gmail.com
DOI: doi.org/10.5281/zenodo.21431235

सारांश-

प्रस्तुत शोध अध्ययन माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में निर्देशन सेवाओं की स्थिति एवं आवश्यकता का स्तर देखने के लिए किया गया है। इस शोध हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप मे 80 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें 40 हिंदी माध्यम, 40 अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी सम्मिलित है। निर्देशन की आवश्यकता को मापने के लिए डॉ जे. एस. ग्रेवाल द्वारा निर्मित उकरण का प्रयोग किया गया है। विद्यार्थियों में निर्देशन की आवश्यकता को देखने के लिए प्रतिशत सांख्यिकीय विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की निर्देशन के प्रति जागरुकता और आवश्यकता का अध्ययन कर रहा है। विद्यालयों में निर्देशन सेवाओं की स्थिति चुनौतीपूर्ण व आवश्यकता आधारित है माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में सर्वाधिक सामाजिक निर्देशन व मनोवैज्ञानिक निर्देशन की आवश्यकता पाई गई है।

मुख्य बिन्दु: निर्देशन, माध्यमिक विद्यालय, निर्देशन स्थिति, निर्देशन आवश्यकता.

प्रस्तावना:

शिक्षा हमारे जीवन में प्रकाश की तरह है ,जिसके माध्यम से बालक की समस्त मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। जिससे वह समाज का उत्तरदायी तथा चरित्र संपन्न नागरिक बनकर समाज के सर्वांगीण उन्नति में अपना सहयोग देता है। बेहतर शिक्षा सभी के लिए जीवन में आगे बढ़ने एवं सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है शिक्षा के द्वारा मनुष्य के भीतर एक क्षमता विकसित होती है, जिससे वह दूसरों से परामर्श एवं निर्देशन ले सकता है और दूसरों को परामर्श एवं निर्देशन प्रदान भी कर सकता है।वह अपने सामान्य एवं संकट के क्षणों में एक दूसरे की मदद करने के लिए निर्देशन देता है जिससे उसकी व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन धारा निर्बाध रूप से चलती रहती है। निर्देशन अर्थात दिशा दिखाने की प्रवृत्ति हर सामाजिक व्यवस्था में किसी न किसी रूप में कार्यशील रही है। जन्म के पश्चात् से ही व्यक्ति जैसे-जैसे समाज के सम्पर्क में आता है, वह स्वयं को अनेक समस्याओं से घिरा हुआ पाता है। घर में, समाज

में, विद्यालय में अथवा अपने दिनचर्या के कार्यों में उत्पन्न समस्याओं के समाधान के लिये, उसे किसी न किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता होती है। निर्देशन का उपयोग, इसी उद्देश्य की पूर्ति में सहायक है।

सामान्यतः निर्देशन को एक ऐसी प्रकिया के रूप में स्वीकार किया जाता है, जिसके आधार पर किसी एक अथवा अनेक व्यक्तियों को किसी न किसी प्रकार की सहायता प्रदान की जाती है। इस सहायता के आधार पर समस्याओं के सम्बन्ध में विवेकपूर्ण निष्कर्ष निकालने, वांछित निर्णय लेने तथा अपने लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को प्राप्त करने में सुगमता होती है।

निर्देशन के आधार पर ही व्यक्ति को अपनी योग्यताओं, क्षमताओं, कौशलों आदि के बारे में ज्ञान हो जाता है तथा वह स्वयं में निहित विशेषताओं का समुचित उपयोग करने में सक्षम हो पाता है। निर्देशन का उद्देश्य व्यक्ति की समस्याओं का समाधान करना नहीं है वरन् इसके आधार पर किसी व्यक्ति को इस योग्य बनाया जाता है कि वह अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं करने में सक्षम हो सके। निर्देशन का केन्द्र बिन्दु व्यक्ति होता है, उसकी समस्या नहीं। उसकी समस्याओं का अध्ययन, निर्देशक बाद में करता है, पहले तो व्यक्ति की शक्ति तथा योग्यताओं का अध्ययन करता है। **चौधरी (2008)** "इस मशीनी युग में मानव की आवश्यकताऐं व समस्याएँ जटिल हो गई हैं। अब पग-पग पर मानव को निर्देशन व परामर्श की आवश्यकता है।

निर्देशन पथ प्रदर्शक की तरह कार्य करता है। जैसे कोई व्यक्ति चौराहे पर खड़ा है; वह चलना जानता है तथा यह भी जानता है कि इन चारों रास्तों में से कोई एक रास्ता उसके गन्तव्य तक जाता है लेकिन; कौन सा वह रास्ता है,यह नहीं जानता; तब किसी अन्य व्यक्ति द्वारा उसे गन्तव्य का रास्ता बताना निर्देशन है। निर्देशन प्रक्रिया निर्देशक या किसी व्यक्ति के अन्दर ज्ञान का विकास नहीं करता अपितु उस व्यक्ति के अन्दर के पहले से उपस्थित ज्ञान को एक सही दिशा प्रदान करके उसे उसके लक्ष्य तक पहुंचाता है। **कोचर (2004)** "मार्गदर्शन कार्यक्रम माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि भारतीय समाज सामाजिक और आर्थिक रूप से तीव्रता से परिवर्तित हो रहा है।''वर्तमान समय में प्रदान किया गया निर्देशन विद्यार्थियों को इस योग्य बनाता है कि वे अपने समाज तथा व्यवसाय के लिए उचित चुनाव कर सकते हैं। **प्रभु (2015)** "निर्देशन व्यक्ति को स्वयं को समझने तथा स्वयं चुनाव करने व निर्णय लेने मे सहायता करता है।''

अनेक शोधकर्ताओं ने अपने शोधकार्यों में विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्कताओं का वर्णन किया है। **शर्मा (2014)** द्वारा किये गये शोध में पाया गया कि विद्यार्थियों को घरेलू समस्याओं का सामना करने के लिए निर्देशन सेवाओं की आवश्यकता है। **निवेदिता एवं सिंह (2015)** ने निर्देशन आवश्यकताओं पर अध्ययन किया और देखा कि शैक्षिक क्षेत्र में विद्यार्थियों को निर्देशन की सर्वाधिक आवश्यकता है जबकि विद्यार्थियों में शारीरिक निर्देशन की आवश्यकता नहीं पायी गयी। **सिंह (2021)** ने अपने शोध में पाया कि छात्राओं की अपेक्षा छात्रों को सामाजिक और शैक्षिक निर्देशन की अधिक आवश्यकता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि निर्देशन विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास एवं सफलता के लिये निर्णायक कारक हैं साथ ही लोगों के मूल्यों और जीवन शैली मे भी बदलाव ला रहे है। निर्देशन व परामर्श सेवाएं विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान करने मे सहायता प्रदान करती है। विद्यार्थियों के लिए निर्देशन समस्याओं के महत्व को ध्यान मे रखकर ही शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की निर्देशन की आवश्यकताओं का अध्ययन करने का निर्णय लिया है।

अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान समय में प्रगति के पथ पर अग्रसर करने हेतु छात्रों में निर्देशन की महत्वपूर्ण भूमिका है प्रत्येक क्षेत्र में विद्यार्थियों को निर्देशन की आवश्यकता होती है चाहे वह व्यक्तिगत को शैक्षिक या व्यावसायिक हो। अनेक विद्यार्थी सही निर्देशन न मिलने के कारण जीवन में सही दिशा या मार्ग में न जाकर असफल हो जाते हैं और अनेक विद्यार्थी सही निर्देशन पाकर ही सही दिशा में जा कर जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं।

विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी विभिन्न प्रकार का ज्ञान प्राप्त करते हैं उन विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करने के लिए उन्हें समय-समय पर निर्देशन देने की आवश्यकता होती है निर्देशन द्वारा ही छात्र भावी जीवन का निर्धारण करते हैं। वर्तमान युग मे निर्देशन शिक्षा का प्रमुख अंग बन गया है इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शोध की आवश्यकता का अनुभव किया गया, अतः यह अध्ययन उपयोगी सिद्ध होगा।

शोध के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालयों में निर्देशन सेवाओं की स्थिति का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना।
3. हिंदी माध्यम के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना।
4. अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना

शोध विधि: प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या: प्रस्तुत शोध में उत्तर प्रदेश राज्य के लखनऊ शहर के माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्श प्रविधि : प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप मे माध्यमिक विद्यालय के 80 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक रूप से लाटरी विधि द्वारा किया गया है।

उपकरण: विद्यार्थियों में निर्देशन की आवश्यकताओं का अध्ययन करने के लिए डॉ. जे. एस. ग्रेवाल द्वारा निर्मित गाइडेंस इन्वेंटरी उपकरण का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण: प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी विश्लेषण हेतु आवृत्ति वितरण एवं प्रतिशत सांख्यिकीय विधि की गणना की गई है।जिसके आयाम निम्न है –

1. भौतिक आवश्यकता
2. सामाजिक आवश्यकता
3. मनोवैज्ञानिक आवश्यकता
4. शैक्षिक आवश्यकता
5. व्यावसायिक आवश्यकता

अध्ययन का परिसीमन

- प्रस्तुत शोध अध्ययन लखनऊ शहर तक सीमित है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल कक्षा 11 एवं 12 के विद्यार्थियों तक की सीमित है।

विश्लेषण एवं व्याख्या:

उद्देश्य सं०1 माध्यमिक विद्यालय में निर्देशन सेवाओं की स्थिति का अध्ययन करना।

माध्यमिक विद्यालय में निर्देशन सेवाओं की स्थिति का अध्ययन अवलोकन विधि के द्वारा किया गया और अध्ययन के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि माध्यमिक विद्यालयों में निर्देशन सेवाओं की स्थिति विद्यालयों के अनुसार भिन्न-भिन्न है, अधिकांश विद्यालयों में विद्यार्थियों के शैक्षिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत तथा सामाजिक निर्देशन संबंधी सेवाएं उपलब्ध थीं, जबकि अनेक विद्यालयों में इन सेवाओं का अभाव या सीमित उपयोग देखा गया। कुछ विद्यालयों में परामर्शदाता और निर्देशनकर्ता मौजूद थे। विद्यालयों में सलाहकार और निर्देशन कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है जहां छात्रों को शैक्षिक ,व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत निर्देशन प्रदान किया जाता है। विद्यालयों में समय-समय पर कैरियर प्रोग्राम, सेमिनार ,कार्यशालाएं आदि का आयोजन किया जाता है तथा विद्यार्थीओं को उनकी समस्याओं के अनुसार शिक्षक और परामर्शदाता निर्देशन देते है । विद्यालय में निर्देशन कक्षाओं तथा निर्देशन सेल की स्थिति कार्यशील थी। । अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि अधिकांश विद्यार्थियों को विषय चयन, भविष्य के करियर निर्धारण, अध्ययन संबंधी समस्याओं के समाधान तथा व्यक्तिगत कठिनाइयों के लिए उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।विद्यालयों में निर्देशन

सेवाओं के संचालन में प्रशिक्षित परामर्शदाताओं की कमी, पर्याप्त संसाधनों का अभाव तथा प्रशासनिक स्तर पर सीमित ध्यान जैसी समस्याएं सामने आई।

कई विद्यालयों में शिक्षक अनौपचारिक रूप से विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते पाए गए, लेकिन व्यवस्थित एवं योजनाबद्ध निर्देशन कार्यक्रमों का अभाव देखा गया साथ कि जहां निर्देशन सेवाएं प्रभावी रूप से संचालित हो रही थीं, वहां विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता, शैक्षिक उपलब्धि तथा भविष्य के प्रति स्पष्टता अधिक पाई गई। अतः माध्यमिक विद्यालय स्तर पर निर्देशन सेवाओं को अधिक सुदृढ़, व्यवस्थित एवं छात्र-केंद्रित बनाने की आवश्यकता है।

उद्देश्य सं०2 माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना।

सारणी संख्या :-1 माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों में निर्देशन की आवश्यकता प्रतिशत में

निर्देशन आवश्यकता	**संख्या**	**कुल अंक**	**प्राप्त अंक**	**प्रतिशत**
भौतिक आवश्यकता	80	3200	975	30.46%
सामाजिक आवश्यकता	80	4800	1834	38%
मनोवैज्ञानिक आवश्यकता	80	4160	1394	33.50%
शैक्षिक आवश्यकता	80	6080	1819	30%
व्यावसायिक आवश्यकता	80	2560	737	29%

ग्राफ संख्या 1:- माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों में निर्देशन की आवश्यकता का आलेखीय निरूपण

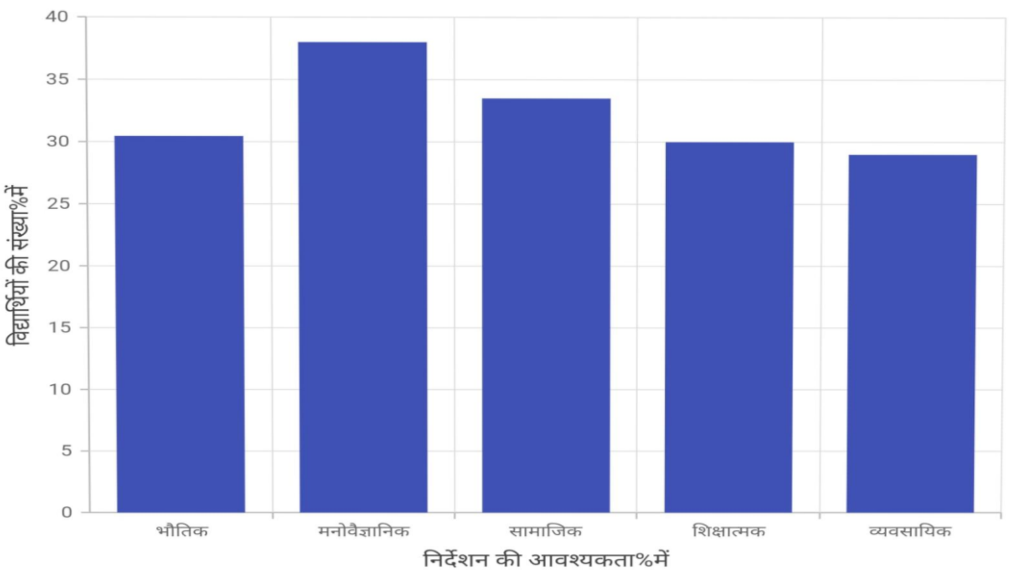

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक निर्देशन की आवश्यकता सर्वाधिक (38%)और और न्यूनतम आवश्यकता व्यावसायिक निर्देशन(29%) की पायी गई है। अतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों को विद्यालयों मे व्यावसायिक निर्देशन के प्रति जागरूक करने के लिए शिक्षकों और निर्देशनकर्ताओ को सेमिनार और कार्यशालयों का आयोजन करना चाहिए।

उद्देश्य सं०3 हिंदी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना।

सारणी संख्या 2:-हिंदी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की निर्देशन की आवश्यकता प्रतिशत में

निर्देशन की आवश्यकता	**संख्या**	**कुल अंक**	**प्राप्त अंक**	**प्रतिशत**
भौतिक आवश्यकता	40	1600	471	29.43%
सामाजिक आवश्यकता	40	2400	895	37.29%
मनोवैज्ञानिक आवश्यकता	40	2080	707	34%
शैक्षिक आवश्यकता	40	3040	945	31.08%
व्यावसायिक आवश्यकता	40	1280	373	29.14%

ग्राफ संख्या 2:-हिंदी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की निर्देशन की आवश्यकता का आलेखीय निरूपण

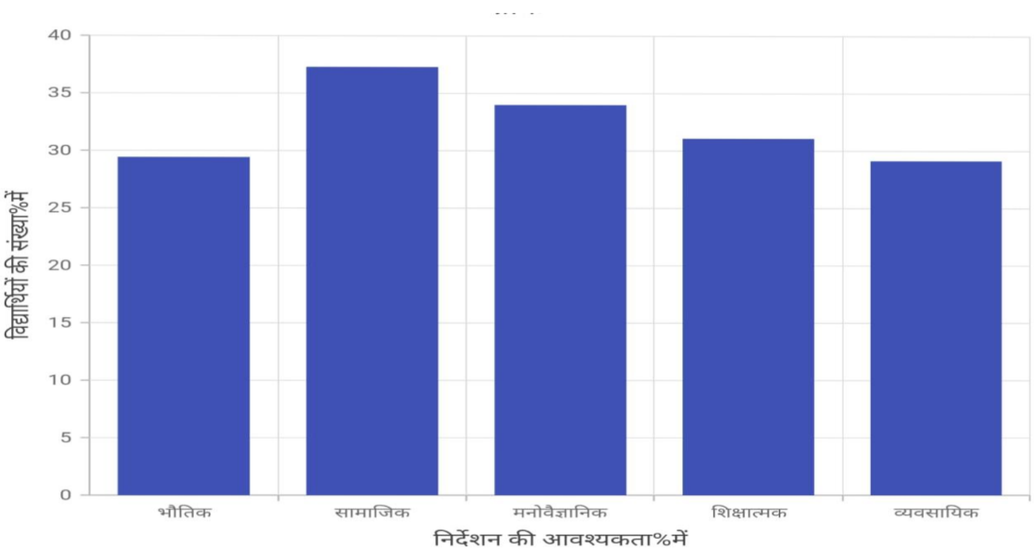

हिंदी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में सामाजिक निर्देशन(37.29%)तथा मनोवैज्ञानिक निर्देशन(34%) की आवश्यकता सर्वाधिक पायी गई है और न्यूनतम आवश्यकता भौतिक निर्देशन(29.43%) और व्यावसायिक (29.14%) की पायी गई है। अतः हिन्दी माध्यम के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों को विद्यालयों मे व्यावसायिक निर्देशन और भौतिक निर्देशन के प्रति जागरूक करने के लिए शिक्षकों और निर्देशनकर्ताओ को व्यावसायिक निर्देशन की और कार्यशालयों का आयोजन करना चाहिए।

उद्देश्य सं०4 अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना।

सारणी संख्या 3:-अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की निर्देशन की आवश्यकता

निर्देशन की आवश्यकता	**संख्या**	**कुल अंक**	**प्राप्त अंक**	**प्रतिशत**
भौतिक आवश्यकता	40	1600	504	31.4%
सामाजिक आवश्यकता	40	2400	939	39.12%
मनोवैज्ञानिक आवश्यकता	40	2080	687	33%
शैक्षिक आवश्यकता	40	3040	874	28.75%
व्यावसायिक आवश्यकता	40	1280	364	28.43%

ग्राफ संख्या 3:-अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की निर्देशन की आवश्यकता का आलेखीय निरूपण

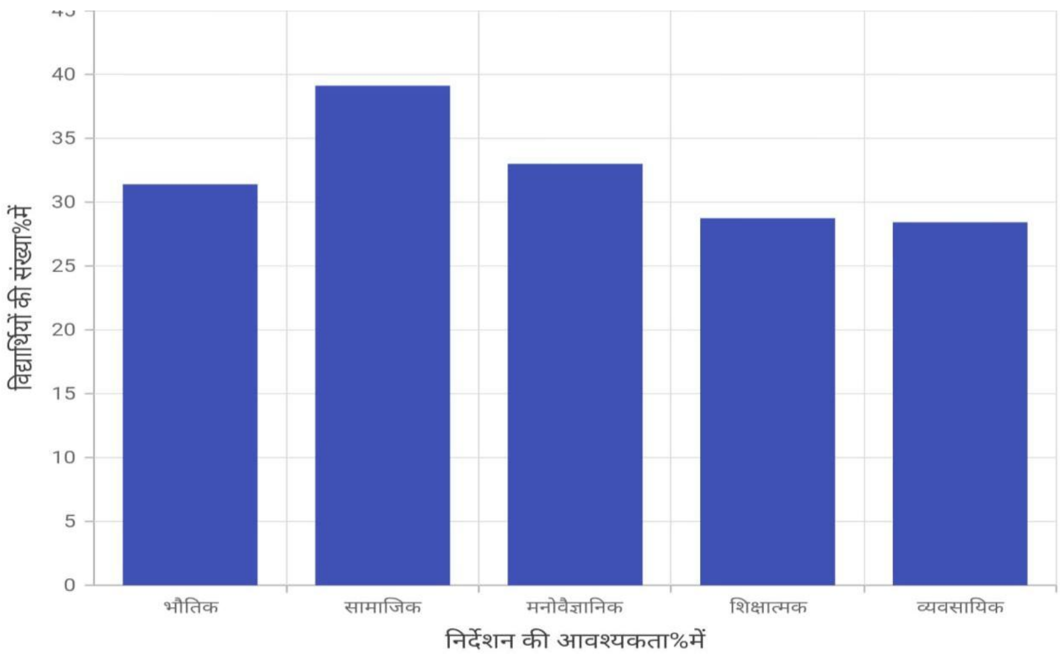

अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में सामाजिक निर्देशन(39.12%) तथा मनोवैज्ञानिक निर्देशन (33%) की आवश्यकता सर्वाधिक पायी गई है और न्यूनतम आवश्यकता व्यावसायिक निर्देशन (28.43%) की पायी गई है। अतः अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों को विद्यालयों मे व्यावसायिक निर्देशन के प्रति जागरूक करने के लिए शिक्षकों और निर्देशनकर्ताओ को व्यावसायिक निर्देशन की और कार्यशालयों का आयोजन करना चाहिए।

निष्कर्ष: वर्तमान अध्ययन माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में निर्देशन सेवाओं की स्थिति एवं आवश्यकता का अध्ययन है। प्रस्तुत अध्ययन में देखा गया कि माध्यमिक विद्यालयों में निर्देशन सेवाओं की स्थिति विद्यालयों के अनुसार भिन्न-भिन्न है, अधिकांश विद्यालयों में विद्यार्थियों के शैक्षिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत तथा सामाजिक निर्देशन संबंधी सेवाएं उपलब्ध थीं, जबकि अनेक विद्यालयों में इन सेवाओं का अभाव या सीमित उपयोग देखा गया। कुछ विद्यालयों में परामर्शदाता और निर्देशनकर्ता मौजूद थे।माध्यमिक विद्यालयों में निर्देशन की उचित एवं व्यवस्थित स्थिति पायी गई और माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में सर्वाधिक सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक निर्देशन की आवश्यकता देखी गई तथा शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन की न्यूनतम आवश्यकता देखी गई । हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में भी सर्वाधिक आवश्यकता सामाजिक मनोवैज्ञानिक निर्देशन की तथा न्यूनतम आवश्यकता शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन की पायी गई है।

इस अध्ययन में पाया गया है कि माध्यमिक विद्यालयों के सभी विद्यार्थियों में सामाजिक निर्देशन,मनोवैज्ञानिक निर्देशन ,शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता सर्वाधिक तथा व्यावसायिक निर्देशन की आवश्यकता न्यूनतम पायी गई है।छात्रों का मार्गदर्शन शिक्षकों के साथ -साथ माता- पिता को भी अपने घर / परिवार के वातावरण मे सुधार करके बच्चों मे स्वायत्तता और आत्म मूल्य की भावनाओं का पोषण कर जागरूक बनाना चाहिए बच्चों का पहला स्कूल उनका घर होता है तो उनकी नीव का निर्माण यही से होता है ।

शैक्षिक निहितार्थ :-प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में निर्देशन की आवश्यकताओं को जानना है। अनुसंधान कार्य के परिणाम भविष्य में नीति निर्धारण की आधारशिला बनते हैं। व्यक्ति विगत अनुभवों से सीखता है तथा उसके अनुरूप कार्य करता है। अतीत के अनुभव व्यक्ति के वर्तमान और भविष्य की समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन अध्यापकों का ध्यान इस और केंद्रित करता है कि वे छात्रों की व्यक्तिगत शैक्षिक व व्यावसायिक समस्याओं को समझ कर उचित मार्गदर्शन प्रदान करें उन्हें अभिप्रेरित करें व विद्यार्थियों की समस्याओं के कारणों को जानकर

उनका समाधान प्रदान करें। प्रस्तुत शोध अध्ययन विद्यार्थियों के लिए भी उपायदेयता रखता है।शिक्षकों को विद्यार्थियों को अपने विचार और राय व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए तथा माता -पिता से बात करते रहना चाहिए जिससे विद्यार्थियों को विभिन्न स्तरों पर सही निर्देशन दिया जा सकता है तथा सही शिक्षण पद्धति के चयन मे सफलता मिलती है

भावी शोध के लिए सुझाव

वर्तमान अध्ययन माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों मे निर्देशन सेवायों की स्थिति और आवश्यकता पर प्रकाश और अंतर्दृष्टि डाल रहा है। भविष्य के शोध के लिए कुछ मुख्य सुझाव नीचे दिए गए है

1. वर्तमान अध्ययन माध्यमिक विद्यालय के 80 विद्यार्थियों तक सीमित है। भविष्य के शोध मे बेहतर और प्रमाणिक परिणाम प्राप्त करने के लिए बड़े नमूने के साथ अध्ययन किया जा सकता है।

2.. वर्तमान अध्ययन माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों पर किया गया है, इस तरह का शोध कॉलेज/बी.एड./डी.एड./व्यावसायिक स्तर के छात्र पर भी किया जा सकता है।

3.. भावी शोध केन्द्रीय विद्यालय (क.व.स) और नवोदय विद्यालय (न.व.स.) में किए जा सकते हैं।

4.वर्तमान अध्ययन उत्तर प्रदेश तक ही सीमित है। कुछ क्षेत्रीय विविधताओं का अध्ययन करने के लिए इसे देश के अन्य राज्यों तक बढ़ाया जा सकता हैं।

5.इसी तरह का अध्ययन कला, वाणिज्य और विज्ञान जैसे विभिन्न वर्गों के छात्रों के आधार पर किया जा सकता है।

6. भविष्य के शोध मे टी -टेस्ट और सहसंबंध जैसे सांख्यिकी विधियों के आधार पर किया जा सकता है।

संदर्भ:

- अहलावत, एम. (2018). घर के वातावरण के संबंध में उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों में निर्देशन की आवश्यकता. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड सोशल साइन्स, 8*(11), 1090 –1109.
- उनियाल, आर. एण्ड खनडुरी, जी. (2020). उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों में निर्देशन की आवश्यकता का एक अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च, 8*(01), 570–575.
- उपाध्याय, ए. (2020). उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में निर्देशन और परामर्श की आवश्यकता का आकलन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवैशन इन रिसर्च एण्ड मैनेजमेन्ट, 8(11),* 1–5.
- कपिल, एच. के. (2002). *अनुसंधान विधियाँ: व्यवहारपरक विज्ञानों में*. राखी प्रकाशन.
- कुमार, एस., एण्ड लखेड़ा, एस. के. (2019).स्टडी ऑफ गाइडन्स नीड्स इन सेकन्डेरी स्कूल स्टूडेंट्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करंट रिसर्च इन एजुकेशन,कल्चर एण्ड सोसाइटी, 3*(1), 32–37.
- कोचर, एस. के . (2004). *शैक्षिक एवं व्यावसायिक मार्गदर्शन: माध्यमिक विद्यालय स्तर पर*.स्टर्लिंग पब्लिशर्स.

- जायसवाल, एस. (2021). *शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श*.मोतीलाल बनारसीदास पब्लिसर्स पीवीटी.एलटीडी.
- नेगी, के . (2017). कॉलेज के विद्यार्थियों में शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक निर्देशन की आवश्यकता का एक अध्ययन. इम्पीरीअल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च*, 3*(1), 1672–1677.
- निवेदिता, & सिंह, जे. (2015). कम्पैरटिव स्टडी ऑफ गाइडन्स नीड ऑफ सेकन्डेरी स्कूल स्टूडेंट्स.इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फिज़िकल एण्ड सोशल साइन्स,7(6),78–87.
- पांडेय, आर. (2019). सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विकास में निर्देशन और परामर्श का प्रभाव. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन ह्यूमन रिसोर्सेज मैनेजमेन्ट *1(2),*83–85
- प्रभु, एस. (2015). उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में निर्देशन की आवश्यकताओं का एक अध्ययन. जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एण्ड सोशल साइन्स*,20(*7),14–17.
- शर्मा,एम. (2014).गाइडन्स नीड्स ऑफ सेकन्डेरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रीलैशन टू ऐकडेमिक एंग्जाइटी.इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइन्स एण्ड इन्टर्डिसप्लनेरी रिसर्च ,*3*(2), 31–37.
- शर्मा, एस. (2012). ए कम्पैरटिव स्टडी ऑफ गाइडन्स नीड्स ऑफ अडोलसकेंट्स एट एट सेकन्डेरी स्कूल। भारतीयम इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड रिसर्च,*1(2),*1–20.
- सिंह, एस. (2021). गाइडन्स नीड्स ऑफ अडोलसकेंट्स स्टडीइंग इन सी.बी.एस.सी. एण्ड.एच.बी.एस ई. स्कूल्स इन रीलैशन टू अजस्ट्मन्ट. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन इनोवेटिव आइडियास इन एजुकेशन,*7(2)*, 729–737.